

## पद १५९

(राग: भीमपलासी - ताल: त्रिताल)

ब्रह्म मूल जग ब्रह्म ब्रह्म जग अहंब्रह्म मतवाला है। ब्रह्मभास माया  
विद्या सब ब्रह्मवृक्ष फलफूला है॥ध्रु॥ अनादि अनंत जीवात्म  
का भेदबाद भ्रमजाला है। ज्ञानस्फुरण अज्ञान तर्क मत चेतन का  
उजियाला है॥१॥ चार मुक्ति महावाक्य बोधसुख शब्द मौन गुरु  
चेला है। अपनी माया जान मिटाई तब गुरु आप अकेला है॥२॥

चिन्माणिक मार्ताण्ड शिष्य गुरु अभेद हरि शिवभोला है। बडो  
भाग्य वैकुण्ठधामसुख आज सकलमत मेला है॥३॥